मिल्टन फ्रीडमैन - Milton Friedman

1912- 2006

अध्ययन सामग्री निर्माण

डा शकील हुसैन

shakeelvns27@gmail.com

विभागाध्यक्ष

राजनीति विज्ञान

शासकीय विश्वनाथ यादव

तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय ।

दुर्ग

छत्तीसगढ़ ।

नैक द्वारा A + मूल्यांकित

मिल्टन फ्रीडमैन एक राजनीतिक अर्थशास्त्री हैं और इसी संदर्भ में उन्होंने राजनीतिक विचार व्यक्त किए है । ये है स्वतंत्रता और समानता । राजनीति अर्थशास्त्र में अपने योगदान के लिए मिल्टन फ्रीडमैन को 1976 में नोबेल पुरस्कार भी प्रदान किया गया था ।

फ्रीडमैन एक शास्त्रीय व्यक्तिवादी हैं इसलिए वह व्यक्ति पर राज्य के किसी भी प्रकार के नियंत्रण का विरोध करते है ।

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

व्यक्तिवादी होने के नाते वे मुक्त बाजार व्यवस्था के समर्थक हैं और मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था तथा स्वतंत्रता एवं समानता में एक आपसी संबंध देखते हैं। इसी के अनुरूप उन्होंने अपने स्वतंत्रता और समानता संबंधी विचार रखते हैं।

उनको नोबेल पुरस्कार उपभोग या कन्जम्पशन पर उनके शोध के लिए दिया गया था, लेकिन राजनीति विज्ञान में उनकी जो महत्वपूर्ण किताब जो राजनीतिक विमर्श का केंद्र बनती है वह है **कैपिटलिज्म एंड फ्रीडम**। इस पुस्तक में उन्होंने विस्तार से समानता एवं स्वतंत्रता संबंधी विचार प्रकट किए हैं।

समानता

मिल्टन स्वतंत्रता से पहले समानता का विचार लेते हैं।क्योंकि उनकी मान्यता है यह समानता की अवधारणा स्वतंत्रता के समस्त विचार को खंडित कर देती है व्यक्ति की स्वतंत्रता अधिक महत्वपूर्ण है बनिस्बत उसकी समानता के। इस दृष्टि से मिल्टन फ्रीडमैन एक नकारात्मक व्यक्तिवादी हैं जो व्यक्ति पर राज्य के किसी भी प्रकार के प्रतिबंध को अनुचित मानते हैं।

समानता के बारे में उनके विचार राजनीति विज्ञानियों की भांति अच्छे नहीं है। **वस्तुतः वे समानता को एक दोष मानते हैं और यह मानते हैं कि समानता स्वतंत्रता को सीमित करने वाली वस्तु है।** उनकी दृष्टि में समानता एक बनावटी चीज है जो साम्यवाद की स्थापना के बाद साम्यवाद से बचाव के उपाय के रूप में पूंजीवादी समाजों में बीमारी की तरह फैल गई है।

इगैलिटेरियन इकोनॉमिक्स और ईगलिटेरियन पॉलिटिक्स को वे साम्यवाद की बीमारी मानते हैं। समता मूलक समाज समतामूलक राजनीति और समतामूलक अर्थशास्त्र यह सब कभी भी प्राप्त नही होने वाले आदर्श हैं।

क्योंकि समानता प्राकृतिक नहीं होती।

इस दृष्टि से वे काफी रूढ़िवादी हैं और एडम स्मिथ और मिल के जमाने के क्लासिकल उदारवाद से सहमति रखते हैं कि व्यक्ति की स्वतंत्रता में किसी भी प्रकार का प्रतिबंध नहीं होना चाहिए। और व्यक्ति की स्वतंत्रता में सबसे बड़ा प्रतिबंध समानता का है। व्यक्तियों को समान बनाकर लोगों की स्वतंत्रता को रोक दिया जाता है इसलिए समानता को दो हिस्सों में देखते हैं

1-, वह कहते हैं कि ईश्वर के समक्ष तो सभी व्यक्ति समान है लेकिन इससे अधिक की किसी और प्रकार की समानता बनावटी और कृतिम है।

2- राज्य केवल यह कर सकता है कि लोगों को अवसर की समानता दें और अवसर की समानता देने के बाद लोगों को उनकी प्रतिभा के अनुरूप स्वतंत्र छोड़ दिया जाए।

हर व्यक्ति के पास इतनी स्वतंत्रा है कि वह अपनी प्रतिभा के अनुसार क्षमता के अनुसार समाज में अपनी जगह बना सकता है। राज्य को इसमें हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है।

अतः समानता का विचार स्वतंत्रता को नियंत्रित करने का एक उपकरण भर है।

मिल्टन फ्रीडमैन समानता को मुक्त बाजार व्यवस्था के लिए खतरनाक मानते हैं। एक परेशानी, एक बाधा मानते हैं। जबकी स्वतंत्रता तथा मुक्त बाजार व्यवस्था में एक अटूट संबंध है तथा समानता की भावना इस

DR SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

संबंध को तोड़ देती है । आतः उन्होंने आह्वान किया कि यदि समाज को प्रगति करनी है तो उसे मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था को अपनाना ही होगा किसी और तरीके से समाज को स्वतंत्र नहीं बनाया जा सकता । **आर्थिक स्वतंत्रता राजनीतिक स्वतंत्रता की अनिवार्य शर्त है और समानता की भावना इस आर्थिक स्वतंत्रता को बाधित करती है करती है ।**

स्वतंत्रता

विभिन्न आर्थिक प्रणालियों पर विचार करने के बाद फ्रीडमैन इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए प्रतिस्पर्धात्मक पूंजीवाद आवश्यक हैं। व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अर्थ है कि किसी मनुष्य को उसके सहचर Fellowers किसी तरह बाध्य न करें। फ्रीडमैन ने आर्थिक और राजनीतिक स्वतंत्रता में तार्किक सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया। उसके अनुसार सामाजिक संगठन की मूल समस्या यह है कि आधुनिक युग की ढेर सारी बढ़ी हुई आर्थिक गतिविधियों में किस प्रकार संतुलन स्थापित किया जाए ?
दूसरे शब्दों में समाज की अभिवृद्ध आर्थिक गतिविधियों और व्यक्तिगत स्वतंत्रता में किस प्रकार सम्बन्ध स्थापित हो ? इसके दो तरीके हैं

1- एक तो सर्वाधिकारवादी तरीका हैं

2- दूसरा तरीका ऐच्छिक सहयोग Voluntary Cooperation का है।

फ्रीडमैन दूसरे तरीके का समर्थन करते है जिसमें आर्थिक लेनदेन न मात्र ऐच्छिक हो बल्कि प्रतिबंध रहित भी हो।
ऐसे समाज का व्यवहारिक प्रतिरूप Free Private enterprise Exchange - मुक्त निजि उद्यम विनिमय अर्थव्यवस्था होगा। इस प्रकार Friedaman लोकत्रंत को बाजार अर्थव्यवस्था के साथ मिलाने की वकालत करता है। उसके अनुसार राज्य को केवल वही कार्य करने चाहिए जिन्हे बाजार अर्थव्यवस्था या तो बिल्कुल नहीं कर सकती या जिसकी लागत इतनी ज्यादा हो कि इसे राज्य ही कर सकता हो । सरकार का कार्य बाजार अर्थव्यवस्था को सहारा देना तथा उसके बचे खुचे कार्य पूर्ण करना हैं, उस पर नियंत्रण आरोपित करना नहीं हैं।

समाहार

इस प्रकार स्पष्ट है कि मिल्टन फ्रीडमैन स्वतंत्रता और समानता की नकारात्मक अवधारणा का समर्थन करते हैं । और किसी हद तक स्वतंत्रता और समानता को परस्पर विरोधी मानते हैं । वह इस परंपरा में जान लाक के समर्थक है जो यह मानते हैं कि राज्य की स्थापना संपत्ति के मौलिक अधिकार की रक्षा के लिए हुई है । इस दृष्टि से राज्य एक ट्रस्टी है । यह कैसा न्यास जो तभी तक कायम रह सकता है जब तक वह अपने उद्देश्य अर्थात संपत्ति की रक्षा करता है । मिल्टन फ्रीडमैन उन विचारको में से हैं जो यह मानते हैं की संपत्ति ही व केंद्रीय विषय है जिसके इर्द-गिर्द मानव सभ्यता का विकास हुआ है । अतः अर्थतंत्र राज्य तंत्र से से अलग नहीं है । लेकिन

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

आर्थिक स्वतंत्रता ही राजनीतिक स्वतंत्रता स्थापित करती है अतः मनुष्य की स्वतंत्रता स्वाभाविक है और समानता बनावटी है । समानता और स्वतंत्रता में परस्पर विरोध है और समानता को स्वतंत्रता के ऊपर थोपना नहीं चाहिए ।

गृह कार्य

1- समानता को फ्रीडमैन क्यो अप्राकृतिक मानते है ।
2- स्वतंत्रता पर फ्रीडमैन के विचारो की समीक्षा कीजिए ।

संदर्भ

फ्रीडमैन , स्टीव बी स्मिथ, एडम्स एण्ड डेन

आनलाइन रिसोर्स

https://en.m.wikipedia.org/wiki/Main_Page

https://www.cato.org/milton-friedman-bio

Feed Back link
https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSdRpNmu6PZ-AMoLrMvODCDwa6-tG3nPDU_Lk-VyjnKKhmfErw/viewform

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE